ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Issues– II (C) March – April, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

गिग अर्थव्यवस्था में महिला कंटेंट क्रियेटर की भूमिका

*** डॉ. भारती यादव**

* *असिस्टेंट, प्रोफेसर, वर्तक कॉलेज.*

सारांश:

*गिग इकॉनमी को हिंदी में **"संगठित स्वतंत्र अर्थव्यवस्था"** या **"गिग अर्थव्यवस्था"** कहा जाता है।यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जहाँ अस्थायी, लघुकालिक या स्वतंत्र अनुबंध आधारित कार्य अधिक होता है।*

सोशल मीडिया और कंटेंट क्रिएटर्स वर्तमान डिजिटल युग में गिग इकॉनमी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। वे विभिन्न पृष्ठभूमि पर अपनी रचनात्मकता और कौशल के माध्यम से कंटेंट तैयार करते हैं, जिससे न केवल वे अपनी पहचान बना रहे हैं, बल्कि अर्थ व्यवस्था में योगदान भी दे रहें हैं। गिग अर्थव्यवस्था में महिलाएँ भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, विशेषकर भारत में, जहाँ गिग अर्थव्यवस्था तेजी से विस्तार कर रहा है। महिला कंटेंट क्रिएटर्स यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक, और अन्य डिजिटल माध्यमों पर विभिन्न विषयों पर सामग्री प्रस्तुत कर रही हैं।

सोशल मीडिया ने महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने और सशक्त होने का मंच प्रदान किया है, लेकिन इसके साथ ही उन्हें कई नकारात्मक परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ता है।

महिला कंटेंट क्रिएटर्स गिग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, लेकिन उन्हें आय असमानता और सामाजिक असुरक्षा जैसे कई चुनौतियाँ उनके सामने हैं। इसके समाधान के लिए नीतिनिर्माण और संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है। ताकि महिलाएँ सुरक्षित और सम्मानपूर्वक कार्य कर सकें और देश की अर्थ व्यवस्था में योगदान दे सकें।

की वर्ड्स : *(गिग अर्थव्यवस्था, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स, महिला गिग श्रमिक, महिला कंटेंट क्रियेटर, साइबर क्राइम, ऑनलाइन ट्रोलिंग, सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक असुरक्षा, डिजिटल सेवा)*

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

गिग इकॉनमी को हिंदी में **"संगठित स्वतंत्र अर्थव्यवस्था"** या **"गिग अर्थव्यवस्था"** कहा जाता है। **गिग** शब्द का मूल अर्थ एक अस्थायी या अल्पकालिक काम है।यह एक ऐसी अर्थव्यवस्था है जहाँ अस्थायी, लघुकालिक या स्वतंत्र अनुबंध आधारित कार्य अधिक होता है। इसमें लोग फ्रीलांस, पार्ट-टाइम या प्रोजेक्ट आधारित काम करते हैं, जैसे कि कैब ड्राइवर, डिलीवरी बॉय, फ्रीलांस राइटर, ग्राफिक डिजाइनर आदि। मुख्य रूप से, गिग इकॉनमी में

ISSN–2278-5655
Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Issues– II (C) March – April, 2025
OPEN ACCESS
Original Research Article

लोग परंपरागत पूर्णकालिक नौकरियों के बजाय स्वतंत्र रूप से काम करते हैं और आमतौर पर डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म (जैसे Uber, Zomato, Upwork) के माध्यम से काम ढूंढते हैं | यह शब्द सबसे पहले संगीत की दुनिया में प्रयोग हुआ था, जहाँ संगीतकारों के एकल या समूह में किए गए प्रदर्शन को **"गिग"** कहा जाता था। बाद में, यह शब्द किसी भी प्रकार के अस्थायी या स्वतंत्र कार्य के लिए इस्तेमाल होने लगा।

आजकल, गिग का मतलब है ऐसा काम जो फुल-टाइम या स्थायी नौकरी न होकर प्रोजेक्ट आधारित, अनुबंध पर या अस्थायी हो। उदाहरण के लिए, कैब ड्राइवर के रूप में काम करना (जैसे Uber या Ola में)। डिलीवरी बॉय के रूप में काम करना (जैसे Zomato या Swiggy में)।फ्रीलांस ग्राफिक डिजाइन या कंटेंट राइटिंग आदि।

गिग अर्थव्यवस्था वर्तमान में भारत में तीव्र गति से विकसित हो रही है, जिसमें अस्थायी, लचीले और स्वतंत्र कार्यों की मांग बढ़ रही है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष २०२०-२०२१ में भारत में लगभग ७७ लाख गिग श्रमिक थे, जो गैर-कृषि कार्यबल का २.६% और कुल कार्यबल का १.५% थे। २०२९-३० तक यह संख्या २.३५ करोड़ तक पहुँचने की संभावना है।

स्मार्टफोन और हाई-स्पीड इंटरनेट की उपलब्धता ने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से कार्य करना आसान बना दिया है।इसके साथ सरकारी नीतियों ने प्रतिस्पर्धा और खुले बाजार को बढ़ावा दिया है, जिससे गिग इकॉनमी का विस्तार हुआ है।कर्मचारियों में लचीलेपन और स्वतंत्रता की चाह बढ़ी है, जिसे गिग कार्य पूरा करता है।ऑनलाइन खरीदारी और डिलीवरी सेवाओं की बढ़ती मांग ने गिग वर्कर्स के लिए नए अवसर सृजित किए हैं।गिग अर्थव्यवस्था भारत में रोजगार के नए अवसर प्रदान कर रही है, लेकिन इसके साथ ही वर्कर्स के अधिकारों और सुरक्षा से संबंधित मुद्दों को संबोधित करना आवश्यक है ताकि यह विकास समावेशी और सतत हो सके।

गिग अर्थव्यवस्था में महिलाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, विशेषकर भारत में, जहाँ यह क्षेत्र तेजी से विस्तार कर रहा है।गिग प्लेटफ़ॉर्म्स महिलाओं को अपने समय और स्थान के अनुसार काम करने की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, जिससे वे घरेलू जिम्मेदारियों और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बना सकती हैं। महिलाएँ घरेलू कार्य, सौंदर्य सेवाएँ, कैब ड्राइविंग, फ़ूड डिलीवरी आदि क्षेत्रों में सक्रिय रूप से योगदान दे रही हैं।

इन सब उपलब्धता के साथ महिला महिला गिग श्रमिकों को अनेक चुनौतयों का सामना करना पड़ता है। उन्हें पुरुष श्रमिकों की तुलना में कम वेतन मिलता है। उदाहरण के लिए, पुरुष और महिला डिलीवरी अधिकारियों के बीच मासिक वेतन में८ से १० प्रतिशत का अंतर पाया गया है। महिलाएँ कार्यस्थल पर उत्पीड़न, भेदभाव और सुरक्षा संबंधी चिंताओं का सामना करती हैं। शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाओं की कमी भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। गिग महिला श्रमिकों को पारंपरिक कर्मचारियों की तरह सामाजिक सुरक्षा लाभ नहीं मिलते, जिससे वे पेंशन, मातृत्व लाभ, बीमा आदि से वंचित रहते हैं।

महिला गिग श्रमिक संबंधी इन कमियों को दूर करने के लिए सरकार और कंपनियों को गिग श्रमिकों, विशेषकर महिलाओं, के लिए सामाजिक सुरक्षा, समान वेतन और

सुरक्षित कार्य वातावरण सुनिश्चित करने हेतु नीतियाँ बनानी चाहिए। महिलाओं को उनके अधिकारों, सुरक्षा उपायों और कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है। समाज में लैंगिक समानता और महिलाओं के प्रति सम्मान को बढ़ावा देना चाहिए, ताकि वे बिना भेदभाव और भय के काम कर सकें। गिग अर्थव्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी से न केवल उनके आर्थिक सशक्तिकरण में वृद्धि होगी, बल्कि समग्र रूप से समाज और अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलेगा।

सोशल मीडिया और कंटेंट क्रिएटर्स वर्तमान डिजिटल युग में गिग इकॉनमी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। वे विभिन्न प्लेटफ़ॉर्म्स पर अपनी रचनात्मकता और कौशल के माध्यम से कंटेंट तैयार करते हैं, जिससे न केवल वे अपनी पहचान बना रहे हैं, बल्कि आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र हो रहे हैं। कंटेंट क्रिएटर्स वीडियो, ब्लॉग, पॉडकास्ट, ग्राफिक्स आदि के माध्यम से अपनी सामग्री प्रस्तुत करते हैं। वे YouTube, Instagram, Facebook, और Twitter जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स का उपयोग करके अपने दर्शकों तक पहुँचते हैं। कई क्रिएटर्स ब्रांड्स के साथ साझेदारी करके उत्पादों या सेवाओं का प्रमोशन करते हैं, जिससे उन्हें प्रायोजन के माध्यम से आय प्राप्त होती है। कई कंटेंट क्रिएटर्स अपने स्वयं के ब्रांड या उत्पाद विकसित करते हैं, जैसे कि ऑनलाइन पाठ्यक्रम, मर्चेंडाइज, या डिजिटल सेवाएँ, जिससे वे स्वतंत्र उद्यमी के रूप में कार्य करते हैं।

सोशल मीडिया और कंटेंट क्रिएटर्स गिग इकॉनमी में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। वे न केवल अपनी रचनात्मकता के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन और सूचनाएँ प्रदान कर रहे हैं, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राप्त कर रहे हैं। हालांकि, उन्हें आय की अस्थिरता, प्लेटफ़ॉर्म निर्भरता, और कौशल विकास जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सरकारी समर्थन और स्वयं के प्रयासों से ये क्रिएटर्स इन चुनौतियों को पार कर सकते हैं और डिजिटल युग में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर महिला कंटेंट क्रिएटर्स की संख्या लगातार बढ़ रही है, और वे विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन कर रही हैं। वे फैशन, सौंदर्य, यात्रा, खाना पकाने, शिक्षा, स्वास्थ्य, और सामाजिक मुद्दों जैसे विषयों पर कंटेंट तैयार कर रही हैं, जिससे वे न केवल अपनी पहचान बना रही हैं, बल्कि आर्थिक रूप से भी स्वतंत्र हो रही हैं।

महिला दिवस के अवसर पर, कई महिला कंटेंट क्रिएटर्स को 'नेशनल क्रिएटर्स अवार्ड' से सम्मानित किया गया। उदाहरण के लिए, जया किशोरी को 'बेस्ट क्रिएटर इन सोशल चेंज' अवार्ड मिला, जबकि मैथिली ठाकुर को 'कल्चरल एंबेसडर ऑफ द ईयर' के रूप में सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनकी उत्कृष्टता और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के प्रयासों को मान्यता देते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर अपने सोशल मीडिया अकाउंट्स को प्रेरणादायक महिलाओं को सौंपने की घोषणा की, ताकि वे अपने कार्यों और अनुभवों को साझा कर सकें। यह पहल महिलाओं के योगदान को सम्मानित करने और उनकी कहानियों को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने का एक प्रयास है। महिला कंटेंट क्रिएटर्स सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी आवाज़ बुलंद कर रही हैं और समाज में

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Issues– II (C) March – April, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। सरकार और समाज के समर्थन से, वे आने वाले समय में और भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

भारत में कई महिला कंटेंट क्रिएटर्स ने अपनी रचनात्मकता और मेहनत से डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म्स पर महत्वपूर्ण पहचान बनाई है। यहाँ भारत की कुछ महिला कंटेंट क्रिएटर्स की चर्चा अपेक्षित है।

श्रुति अर्जुन आनंद ने वर्ष २०१० में अपना यूट्यूब करियर आरंभ किया था । श्रुति ब्यूटी, फैशन और फैमिली एंटरटेनमेंट के लिए मशहूर हैं। वर्तमान में उनके १.२ करोड़ से ज्यादा सब्सक्राइबर्स हैं। **वर्ष २०११** में यूट्यूब चैनल की शुरुआत करने वाली निशा **मधुलिका** जी अपनी सरल शाकाहारी रेसिपी और घरेलू स्टाइल की वजह से लाखों लोगों का भरोसा जीत चुकी हैं। **प्राजक्ता कोली** (MostlySane) प्राजक्ता अपने हास्य रेखाचित्रों और सामाजिक मुद्दों पर प्रासंगिक टिप्पणियों के लिए जानी जाती हैं। उनकी यूट्यूब यात्रा प्रेरणादायक है और उन्होंने लाखों लोगों के दिलों में जगह बनाई है । कबिता सिंह, जो 'कबिताज़ किचन' के नाम से प्रसिद्ध हैं, अपने यूट्यूब चैनल पर विभिन्न स्वादिष्ट और सरल रेसिपी साझा करती हैं। उन्हें 'बेस्ट क्रिएटर इन फूड कैटेगरी' के लिए नेशनल क्रिएटर्स अवार्ड से सम्मानित किया गया है। लोक गायिका मैथिली ठाकुर अपनी सुरीली आवाज़ और भारतीय शास्त्रीय संगीत में उत्कृष्टता के लिए जानी जाती हैं। ट्यूब पर उनके लाखों फोल्लोवर्स हैं। उन्हें 'कल्चरल एंबेसडर ऑफ द ईयर' के रूप में सम्मानित किया जा चुका है।

जया किशोरी एक स्पिरिचुअल और मोटिवेशनल स्पीकर हैं, जो धार्मिक प्रवचनों और भजनों के माध्यम से लोगों को प्रेरित करती हैं। उन्हें 'बेस्ट क्रिएटर इन सोशल चेंज' अवार्ड से नवाजा गया है। कामिया जानी एक ट्रैवल और फूड ब्लॉगर हैं, जो 'Curly Tales' नामक यूट्यूब चैनल चलाती हैं। उन्होंने 'मोस्ट क्रिएटिव ट्रैवल क्रिएटर' का खिताब अपने नाम किया है। श्रद्धा जैन एक सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर हैं, उन्हें 'मोस्ट क्रिएटिव क्रिएटर (फीमेल)' के अवार्ड से सम्मानित किया गया है। **कीर्तिका गोविंदासामी** एक कहानीकार हैं, जो सोशल मीडिया पर इतिहास से जुड़ी कहानियाँ साझा करती हैं। उन्हें 'बेस्ट स्टोरीटेलर' के अवार्ड से सम्मानित किया गया है। जान्हवी सिंह एक स्पिरिचुअल कंटेंट क्रिएटर हैं, जिन्हें 'हेरिटेज फैशन आइकन' अवार्ड से सम्मानित किया गया है। ये कुछ प्रमुख महिला कंटेंट क्रिएटर्स है जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा और मेहनत से डिजिटल दुनिया में महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया है, और वे अनेक लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं और साथ ही सोशल मीडिया के माध्यम से गिग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

गिग अर्थव्यवस्था में महिला कंटेंट क्रिएटर्स का योगदान महत्वपूर्ण है, हालांकि इस क्षेत्र में उनके योगदान का सटीक मात्रात्मक डेटा सीमित है। महिलाएँ ब्लॉगिंग, पॉडकास्टिंग, वीडियो निर्माण, और सोशल मीडिया जैसे प्लेटफ़ॉर्म्स पर सक्रिय रूप से कंटेंट निर्माण कर रही हैं, जिससे वे न केवल अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन कर रही हैं, बल्कि आर्थिक स्वतंत्रता भी प्राप्त कर रही हैं। महिला कंटेंट क्रिएटर्स यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक, और अन्य डिजिटल माध्यमों पर विभिन्न विषयों पर सामग्री प्रस्तुत कर रही हैं, जिससे वे

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Issues– II (C) March – April, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

व्यापक दर्शकों तक पहुँच बना रही हैं।कंटेंट क्रिएशन के माध्यम से महिलाएँ स्वतंत्र रूप से आय अर्जित कर रही हैं, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं। इसके साथ ही उनके कुछ चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। महिला गिग वर्कर्स को पुरुष समकक्षों की तुलना में कम वेतन मिलने की प्रवृत्ति देखी गई है। उदाहरण के लिए, डिलीवरी उद्योग में पुरुष और महिला अधिकारियों के बीच मासिक वेतन में ८ से १० प्रतिशत का अंतर पाया गया हैं। महिलाओं को कार्यस्थल पर उत्पीड़न, भेदभाव, और सुरक्षा संबंधी चिंताओं का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके काम करने की स्थिति प्रभावित होती है। गिग वर्कर्स के रूप में, महिलाओं को पारंपरिक कर्मचारियों की तरह सामाजिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिलता, जिससे वे आर्थिक असुरक्षा का सामना करती हैं।

यहाँ एक बात और ध्यान देने योग्य है, सोशल मीडिया ने भले ही महिलाओं को अपनी आवाज़ उठाने और सशक्त होने का मंच प्रदान किया है, लेकिन इसके साथ ही उन्हें कई नकारात्मक परिस्थितियों का भी सामना करना पड़ता है। महिलाओं को सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणियाँ, धमकियाँ और ट्रोलिंग का सामना करना पड़ता है, जो उनकी मानसिक सेहत पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। दिल्ली की एक ट्रांस महिला, रेवती (बदला हुआ नाम), के अनुसार, सार्वजनिक पोस्टों पर उनकी लैंगिक पहचान को निशाना बनाकर भद्दी टिप्पणियाँ की जाती हैं, जिससे उनका ऑनलाइन अनुभव कष्टदायक हो गया। प्रसिद्ध पत्रकार राणा अय्यूब को उनके विचारों और रिपोर्टिंग के कारण ऑनलाइन ट्रोलिंग, धमकियों और अभद्र टिप्पणियों का सामना करना पड़ा। उन्हें सोशल मीडिया पर लगातार निशाना बनाया गया, जिससे उनकी मानसिक सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इसी तरह वरिष्ठ पत्रकार बरखा दत्त को भी ऑनलाइन ट्रोलिंग और धमकियों का सामना करना पड़ा। उन्हें सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणियों और धमकियों का शिकार बनाया गया, जिससे उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ा। राजनीतिक कार्यकर्ता शेहला रशीद को उनके विचारों और गतिविधियों के कारण ऑनलाइन ट्रोलिंग और धमकियों का सामना करना पड़ा। उन्हें सोशल मीडिया पर अभद्र टिप्पणियाँ एवं धमकियाँ दी गई | सामाजिक कार्यकर्ता कविता कृष्णन को भी ऑनलाइन ट्रोलिंग और धमकियों का सामना करना पड़ा। उन्हें सोशल मीडिया पर अपमानजनक टिप्पणियाँ मिली, जिससे उनकी स्वतंत्र अभिव्यक्ति पर प्रभाव पड़ा। पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज को भी ऑनलाइन ट्रोलिंग का सामना करना पड़ा। उन्हें सोशल मीडिया पर अभद्र टिप्पणियों और धमकियों का शिकार बनाया गया, जिससे उनकी सार्वजनिक छवि पर प्रभाव पड़ा।इस तरह की घटनाओं से स्पष्ट होता है कि ऑनलाइन ट्रोलिंग महिलाओं के लिए एक गंभीर समस्या है, जो उनकी मानसिक सेहत, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और सार्वजनिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।

सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म्स पर प्रचलित अवास्तविक सौंदर्य मानक महिलाओं पर एक विशेष शारीरिक छवि को बनाए रखने का दबाव डालते हैं। यह दबाव उनकी आत्म-छवि को प्रभावित करता है और मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे चिंता और अवसाद, को बढ़ावा दे सकता हैं।

सोशल मीडिया पर महिलाएं लैंगिग भेदभाव का भी सामना

ISSN–2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Issues– II (C) March – April, 2025
OPEN ACCESS Original Research Article

करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में, यदि महिलाएँ सोशल मीडिया का उपयोग करती हैं, तो उनके चरित्र पर सवाल उठाए जाते हैं। इसके विपरीत, पुरुषों के लिए यह सामान्य माना जाता है, जो लैंगिक भेदभाव को दर्शाता है। थोड़े बहुत अंतर के साथ यह भेदभाव शहरी क्षेत्रों में भी देखा जाता है।

सोशल मीडिया पर लगातार सक्रिय रहने से महिलाओं में उदासी, निराशा और आत्म-संदेह की भावनाएँ बढ़ सकती हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, किशोरियों में सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग उनके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालता है, जिससे अवसाद और चिंता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।

सोशल मीडिया महिलाओं के लिए अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम है, लेकिन इसके साथ आने वाली चुनौतियों को समझना और उनका समाधान करना आवश्यक है। सुरक्षित और समावेशी ऑनलाइन वातावरण बनाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है, ताकि महिलाएँ बिना किसी भय या भेदभाव के डिजिटल दुनिया में सक्रिय रह सकें। महिला कंटेंट क्रिएटर्स गिग अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, लेकिन उन्हें आय असमानता और सामाजिक असुरक्षा जैसे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन मुद्दों के समाधान के लिए समावेशी नीतियों और संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है।

संदर्भ :

१-क्रियेटर इकॉनमी, PWONLYIAS, १८ मार्च २०२५

२- बात गिग इकॉनमी में महिला सुरक्षा की, फेमिनिस्म इन इंडिया, ४ दिसंबर २०२५

३- भारत में गिग इकोनोमी का उदय, दृष्टि आईएस, १४ जनवरी २०२२

४- भारत की गिग इकोनॉमी, दृष्टि आईएस, २८ जून २०२२

५- महिला दिवस पर महिलाओं को मिला कंटेंट क्रिएटर्स अवार्ड, इंडिया टीवी, ८ मार्च २०२४

६- साइबर संसार में ट्रोलिंग और उससे जुड़े कानून, AFEIAS १८ जून २०२४

७- जानिए भारत की उभरती महिला यू ट्यूबर्स के बारे में, She the People, २२ जुलाई २०२३

Cite This Article:

डॉ. यादव भा. *(2025). गिग अर्थव्यवस्था में महिला कंटेंट क्रियेटर की भूमिका.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number II, pp. 69–74).